चल उठ..

काव्य संग्रह

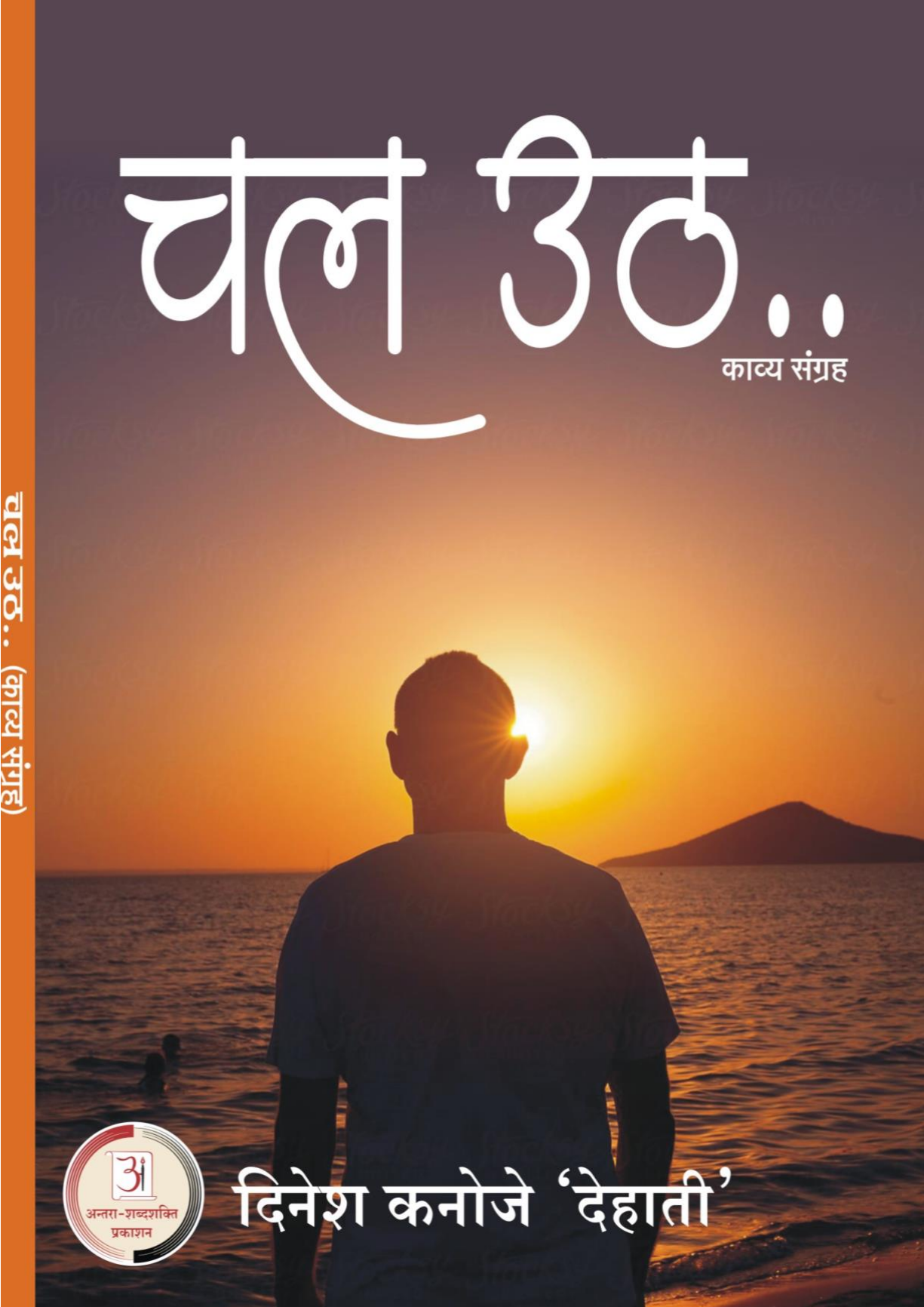

दिनेश कनोजे 'देहाती'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

चल उठ.. (काव्य संग्रह)

चल उठ

(काव्य संग्रह)

दिनेश कनोजे 'देहाती'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-245-6

संपादक- डॉ प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

मोबाईल- 9424765259, 9009465259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www-antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, दिनेश कनोजे 'देहाती'

मूल्य- 250.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY DINESH KANOJE 'DEHATI'

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मेरे दो शब्द

अगर तुम्हें अपनी जीत से प्यार हैं,
तो सुनो हार ही जीत की सूत्रधार है।

"चल उठ" काव्य संग्रह मेरे इसी विचार धारा कि परिणिति है। पुरस्कार के रूप में 'जीत' हासिल करने से बेहतर है, 'जीत' कर पुरस्कार लेना। आकांक्षाओं का विस्तार आपके प्रयासों को दिशा और बल देता है और निष्ठा सफलता के द्वार खोलती है।

वर्ष 2020 अपने साथ विडंबनाओं का अंबार लेकर प्रकट हुआ है और बस-सब ठहर सा गया था। ऐसे अवसाद भरे वातावरण में लेखन के माध्यम से जुड़ना और उत्साहित मानसिकता के साथ नई दिशाओं में बढ़ना वाकई चमत्कार था, किन्तु हमारी अभिन्न मित्र डॉ. प्रीति सुराना की संकल्प शक्ति ने हमें जोड़ दिया इस सृजन यात्रा से। जिसे आज़ अपने लिए साहित्यिक उपल्ब्धि निरुपित करता हूँ अपने इस चतुर्थ काव्य संग्रह "चल उठ" को।

लाकडाऊन की अस्थिरता में उत्साह का संचार करती मेरी पत्नी श्रीमती पुष्पा कनोजे के सहयोग के बिना सब अधुरा रहता। मेरे प्रिय अनुज राजेश कनोजे दोनों पुत्र प्रतीकराज एवं संकेतराज ने मनोवैज्ञानिक रूप से बहुत संबल दिया। मेरे मातृसंस्थान मॉयल लिमिटेड का अनुशासित परिवेश जो मेरी इस सफलता के लिए अति आवश्यक था। शेष सब ईश्वर की कृपा से ही संभव हुआ जिसके लिए मेरी प्रार्थना के शब्द सदैव उनकी वंदना करते रहेंगे।

आशा है आप "चल उठ" एक बार अवश्य पढ़ेंगे और अपनी प्रतिक्रिया से अवगत करायेंगे।

दिनेश कनोजे 'देहाती'

अनुक्रमणिका

1.	चल उठ	7
2.	राष्ट्र हित	8
3.	जो उठना चाहता है	9
4.	बहुत है उँगली उठाने वाले	11
5.	अंतर्मन	12
6.	सड़क की पीड़ा	13
7.	आषाढ़	15
8.	एक जरा ठंडी हवा आने के बाद	16
9.	आजकल	17
10.	हाथ बढ़ा के	18
11.	भूख	19
12.	अमर हो जायेगा	20
13.	आज कुछ अलग सी बात है	21
14.	उमंग	22
15.	गाँव पर उँगली मत उठाना	23
16.	पलक	25
17.	हम तो "देहाती" हैं	26
18.	ठहरो	28
19.	सूरज भैया	29
20.	तुम-सोचो!	30
21.	ठहर जायेगा	31
22.	सूरज फिर ढलान पर है	32
23.	ईमानदारी- एक जीवन शैली	33
24.	चलो बचपन में चलते हैं	34
25.	सफलता	36
26.	एक नन्हा सा पल	37

27.	कुछ कहना चाहता हूँ मैं	39
28.	तुम	41
29.	क्षितीज	42
30.	प्यार चाहिए	44
31.	दीपदान	45
32.	यह युद्ध है	46
33.	दीपक	47
34.	प्रकृति को प्रणाम करो	48
35.	हाँ, माँगने की आदत है मेरी	49
36.	कलम	51
37.	आमंत्रण	52
38.	जीव रक्षा	54
39.	विजेता	56
40.	आओ चलें	57
41.	ना बाबा	58
42.	जय बोलो	59
43.	पेंसिल की नोक	61
44.	अपने हिस्से की	62
45.	खानाबदोश	63
46.	हमारा गाँव तिरोड़ी है	64
47.	खरपतवार	65
48.	ग़रीबी	65
49.	यदि नहीं तो क्यों नहीं?	66
50.	चलो, नया सबेरा लाते हैं	67
51.	सीमाओं का संकट	68
52.	गौ माता को चरने दो	69
53.	पांसे पलट गए	70
54.	आई लव यू	72

55.	**वो फिर उतर आए सड़क पर**	73
56.	**कैसा लगता है**	75
57.	**दो गज का फासला**	76
58.	**पतलून**	77
59.	**मुझे छोड़कर**	78
60.	**हम हिंदुस्तानी**	79
61.	**सियासत नहीं सहयोग करो**	80
62.	**श्रमिक दिवस**	81
63.	**आज के युवा**	82
64.	**अनजाना भय**	83
65.	**एक दिन ऐसा भी आएगा**	85
66.	**हम बोलेगा, तो बोलोगे कि बोलता है!**	86
67.	**अपनी बात है**	87
68.	**बरसात की आस**	88
69.	**सीढ़ियाँ**	89
70.	**घंटानाद**	90
71.	**मतवाली शाम**	91
72.	**खबर**	92
73.	**दीपक**	93
74.	**नीलकंठ महादेव**	94
75.	**ढोल**	95
76.	**पल**	96

चल उठ

चल उठ,
अब अलसाई सी
अंगड़ाई न ले।
भोर भी भंग हो कर
ढंग से दिन में
ढलने को है तत्पर,... चल उठ।

चल उठ,
तेरी सुप्त संवेदनाओं के
द्वार पर लगी
संतुष्टि की सांकल को
दायित्व के हाथ खोल रहें हैं
बोल रहे हैं,... चल उठ।

चल उठ,
अब तेरी पदचाप की
आहट से ही शुरू होगी
दिन की दिनचर्या,
सुबह दोपहर और
फिर शाम को लाकर
पटक देगा उसी द्वार पर,
जहाँ थकान की चादर
तुम्हे लेकर चली जाएगी
नींद के आगोश में,... चल उठ।

राष्ट्र हित

स्वस्थ शरीर के लिए हम रोज योग करें,
राष्ट्र हित में हम मिलकर सहयोग करें।

दया करूणा के नाम घमंड नहीं,
दान दक्षिणा दो तो कोई दंड नहीं,
समय ने बदली है परिभाषा सुनो,
संकट को न समझे वो संबंध नहीं,
आपदा का सामना मिल सब लोग करें,
राष्ट्र हित में हम मिलकर सहयोग करें।।

भूख ही है ये जो घर छुड़ाए,
भूख ही है जो सब बिसराए।
भूख ने भुला दिए रिश्ते-नाते,
भूख की भयावहता क्या बताएं।
भूख का समाधान न कोई संजोग करे।
राष्ट्र हित में हम मिलकर सहयोग करें।।

अंधेरों में भटकते कल के उजाले,
उनका भी मुँह चिढ़ाते हैं निवाले,
दरबदर है मुफलिस इंसान यारों,
बंद मस्जिद है और बंद शिवाले।
आज परीक्षा हेतु संयम का उपयोग करें।
राष्ट्र हित में हम मिलकर सहयोग करें।।

एक हाथ से दोगे दस से पाओगे,
आज नहीं दोगे तो कैसे पाओगे।
हमे कोई हमारा समझ सके जो,
खो दोगे तो फिर कहाँ लाओगे।।
समाज कल्याण का अभी मनोयोग करें।।
राष्ट्र हित में हम मिलकर सहयोग करें।

जो उठना चाहता है

कठिनाइयों से जूझते हुए जो उठना चाहता है।
वो जरुर उठता है जो दिल से उठना चाहता है।।

कोशिश तो करना पड़ेगा,
मुश्किलों से भिड़ना पड़ेगा।
यह युद्ध तुम्हारा अपना है,
इसे तुम्हें ही लड़ना पड़ेगा।
जीत तो उसकी ही होती है जो जीतना चाहता है।
वो जरुर उठता है जो दिल से उठना चाहता है।।

आदमी को परिवार के प्रति
अपने दायित्वों का बोध हो,
आज ग़रीबी अभिशाप है या
मनोरोग इस पर भी शोध हो।
इस त्रासदी से हट जाता है जो हटना चाहता है।
वो जरुर उठता है जो दिल से उठना चाहता है।।

जो कल संवारना चाहता है
उसका आज संवर जाता है,
जिसे कल भी अंधकार दिखे
उसका आज बिखर जाता है।
बूंद बूंद से घड़ा भरता है जो भरना चाहता है।
वो जरुर उठता है जो दिल से उठना चाहता है।।

बेकारी है तो ये मजदूर कौन है,
काम नहीं तो अस्तित्व गौण है,
क्या खैरात ग़रीबी की आया है?
बस, बाँट रहे हैं पर सब मौन है।
गर्व से जरुर जीता है जो जीना चाहता है।
वो जरुर उठता है जो उठना चाहता है।।

चाहत है तो ग़रीबों से कहो,
आज संवारो कल से मत डरो।
मुफ्तखोरी निकम्मा बना देगी,
श्रम साधक हो सम्मान से रहो।
छोड़ देता है कलंक, जो छूटना चाहता है।
वह जरुर उठता है जो उठना चाहता है।।

हिम्मत करने से हार भी डरे,
फल जो भी कोशिश तो करें।
भगीरथ के वंशज हैं हम तो
बढ़ो बेफिक्र फिर जीये या मरें।।
पर्वत भी राह देते हैं जो ऊपर चढ़ना है।
वह जरुर उठता है जो उठना चाहता है।।

बहुत है उँगली उठाने वाले

संभव है संकट भांप लिया
तभी मीलों दूरी नाप लिया।
पांवों पर भरोसा था तभी
पैदल प्रण चुपचाप लिया।
कौन थे साधन जुटाने वाले।
बहुत है उँगली उठाने वाले।।

अपने देश में प्रवासी कैसे?
प्रवासी फिर देशवासी कैसे।
आधार भी निराधार है क्या?
निर्दोष को यह फांसी कैसे।
रे कौन हमको मिटाने वाले।
बहुत है उँगली उठाने वाले।

नव निर्माण की इकाई हम,
शुन्य हैं हम छोड़ दो वहम।
माना तुम हो दाता हमारे
हम नहीं दानदाता से कम।
हम ही एक दूजे को संभाले।
बहुत है उँगली उठाने वाले।।

छोड़ा दर तो खूब रोया था,
तू भी कब चैन से सोया था।
काल अकाल से लड़ेंगे साथ
काटेंगे संग, जो संग बोया था।
हम नया भारत बनाने वाले।
बहुत है उँगली उठाने वाले।।

अंतर्मन

मुखमुद्रा से परिलक्षित छद्म मुस्कान
मन के आनंद की अभिव्यक्ति नहीं होती।
मुखमंडल मानव के
आचरण का आवरण मात्र है,
अंतस की आवाज
कदाचित हर क्षण जिव्हा पर नहीं आती।
मनुष्य को
अपनी अनुभूतियों को आवश्यकतानुसार
प्रदर्शित करने की विशेषज्ञता प्राप्त है।
तभी तो हम सब
एक अदृश्य भय से ग्रस्त होकर भी
अपने साहसी, सक्षम होने का प्रर्दशन कर रहे हैं।
डरना आवश्यक है
किंतु उसकी परिणति अवसाद नहीं
अपितु सतर्कता, संयम और सावधानी से
सामना करने का साहस जुटाने कि चेतावनी है।
किसी रात्रि का स्याह अंधेरा तुम्हारा शत्रु नहीं
तथापि वह एक नई भोर की
शुभ्र आभा को संयोजित कर रहे समय का अंतराल है।
बस- हम भी आज
इसी अंतराल के काल में विचरण कर रहे हैं,
धैर्य धारण कर अपनी
भाव-भंगिमा से विश्वास का संचार होने दो।
योद्धा हो तुम,
अपने आत्मविश्वास से मिटा दो संपूर्ण मलिनताएँ।
तुम आदर्श हो अपने परिवार के,
अपने अनुयायियों के, अपने अनुचरों के, अपने गली के गाँव के,
तुम में है दम, तो सारे संकट खतम।
स्वयं करो, सबसे कहो,... मुस्कुराते रहो।

सड़क की पीड़ा

मैं सड़क हूँ!
देश के उत्थान का मैंने, सदैव मार्ग प्रशस्त किया,
अभिमान किया स्वयं पर, राष्ट्र प्रहरियों को रास्ता दिया।
औद्योगिक क्रांति का शंखनाद, मुझ पर चल कर ही किया
चतुष्कोण बनाते हुए मैंने, देश को विकास की दिशा दिया।

संकरी गलियों से विकसित हो, महामार्ग बनकर हुई स्थापित,
उल्लास भरा, गौरव बढ़ाया, सम्मानित हुई, कभी हुई शापित।
अपना गौरव गान देश के, मुखिया से सुनकर इतराई,
कभी उतरी ढलान बनकर, कभी पर्वतों पर की चढ़ाई।

दो पहिया वाहन से लेकर, चार-छः दस-बीस पहियों पर,
ढोया वज़न तो वजूद को सराहा, ऊंचा किया सर।
स्वयं के विस्तार के लिए मैंने, काटे वृक्ष और उजाड़े घर,
तब भी अभिमान ही हुआ, नहीं लगा किसी से डर।

विकट विडंबना ने इंसान को, जब खुद से ही हरा दिया,
अनिश्चितता में अनजाने में, उठे कदमों ने मुझे डरा दिया।
कोई रिक्शा कोई सायकल से, अंधाधुंध दिन रात चला,
किसी को किस्मत ने, किसी को बेरहम समय ने छला।

दम निकलने कि परवाह किए, बिना वह दम लगाता रहा,
खुद टूटता गया राही और बाकी को हरदम जगाता रहा।
घिसी चप्पल और फटे जूते, लंबा सफर इनके बलबूते,
तय कर लेने की ठानी, खुद के साथ की मनमानी।

जलते तलवे के रिसते घाव, अरे कोई तो इन्हें समझाव,
कहीं गोद में लिए बच्चे और माँ कि ममता का बिखराव।
थकी हुई माँ का लाल नन्हे पैरों से, उसकी उँगली थाम जब चलता है,
उन्हे सहलाऊं की सजा दूं, हृदय रुदन नहीं संभलता है।

उफ़! ये मंज़र सोने नहीं देता, रोता है दिल पर रोने नहीं देता,
प्यास से व्याकुल, भूख से त्रस्त, चल रहें हैं फिर भी अलमस्त।
घायल पाँव का रक्त सह नहीं पाती, मंजिल सबकी हूँ, खुद चल नहीं पाती,
सड़क हूँ ना, पहली बार खुद, इन बेचारों का दर्द सह नहीं पा रही हूँ।

बातें खूब करती हूँ रफ्तार से, पांवों से कुछ कह नहीं पा रही हूँ,
क्या करोगे पथिक संभाल कर, इन छद्म उजालों को।
जो मरहम न दे सके जलते हुए, पांवों के छालों को,
नर्म हृदय है मेरा, आवरण से कड़क हूँ।
सबको पहुंचाती, खुद ना जाती, सड़क हूँ।
मैं सड़क हूँ!!!

आषाढ़

आया है आषाढ़ का अंधड़, इस बागड़बिल्ले को नचाते हैं।
सूरज छुपा बादलों में, चांद के चेहरे से जुल्फों को हटाते हैं।।

सुन, बरगद की मत सुनना,
वो तुम को तो जरुर टोकेगा,
अपनी छांव में आने के लिए
इस अंधड़ में सबको रोकेगा।
अमराई से अंबिया लुट रही है, पहले अंबिया को बचाते हैं।
आया है आषाढ़ का अंधड़, इस बागड़बिल्ले को नचाते हैं।

हो रही है बुंदाबांदी हौले हौले,
टीन की छत भी टप-टप बोले।
तेज हवा का झोंका झकझोरे,
बड़ा पीपल नागिन सा डोले।
नीम को भी मरोड़ा पागल ने, बिखरी है निंबोली, हटाते हैं।
आया है आषाढ़ का अंधड़, इस बागड़बिल्ले को नचाते हैं।

काका की छतरी की छत उड़ी,
कमबख्त ये डंडी भी मुड़ गई।
बड़ी मुश्किल से संभाला था,
ताऊ की प्यारी धोती उड़ गई।
छेड़ रहा है छबीले छोरों को, ठहर बांवरे तुझे मज़ा चखाते हैं।
आया है आषाढ़ का अंधड़, इस बागड़बिल्ले को नचाते हैं।

एक जरा ठंडी हवा आने के बाद

खयाल अब हमारे बहकते बहुत है,
इच्छाओं के पंछी चहकते बहुत है,
झिझकने लगी उम्र भी बढ़ने से अब,
मोहब्बत के गुलशन महकते बहुत है।
एक जरा ठंडी हवा आने के बाद,...

लफ़्ज़ों की पतझड़ ज़ुबानी जंग,
इरादे बड़े हैं मगर दिल है तंग,
बदली बदली है चमन की हवा,
है नफरत की आंधी में दुबकी उमंग।
एक जरा ठंडी हवा आने के बाद,...

करेंगे हम कोशिश निकालेंगें हल,
यकीं है दोस्त हम बदल देंगे कल।
सरहदें जब पुकारेगी हमको कभी,
नज़र आयेंगे सरफ़रोशों के दल,
एक जरा ठंडी हवा आने के बाद,...

प्रकृति का चक्र है विकृत न हो देखना,
कोई अपना तिरस्कृत न हो देखना,
हम ही सारथी हैं हम ही पहरेदार,
कोई ग़लत इंसान उपकृत न हो देखना।
एक जरा ठंडी हवा आने के बाद,...!

आजकल

गुण घास छिल रहे, सिफारिश इतराय।
डिग्रियां खूंटी पर है, रद्दी पड़ी धूल खाय।

लोग बड़े हैं छोटे हैं, लुभावने मुखौटे हैं।
भीड़ में भीड़ते रहे, संस्कारों के टोटे हैं।

नशा नाश का कारण, ढेर सारे उदाहरण।
संयम ही समाधान, बने सदैव ही तारण।

निंदा करते आदमी, क्रुर कपटी अपात्र।
रोग के विस्तार से, सागर भी बूंद मात्र।

मना है अब डरना, सुशांत सा मरना,
खुद से या गैरों से, जरूरी प्यार करना।

हारो पर हारना मत, दिल में उतारना मत।
बात जिंदगी की हो, पल में सारना मत।

हाथ बढ़ा के

क्या करोगे हमारी राह में रोड़े अड़ा के।
हम तो दरिया में कूद जाते थे पैंट चढ़ा के।

दोस्त हो तो पीठ पर नजर मत डालो,
दुश्मन को भी अपना लेते हैं हाथ बढ़ा के।

हौसला बुलंद हैं तो पहाड़ पर चढ़ जाएं?
बेवकुफ़ियां ढूंढ रहा है वो नजरें गड़ा के।

गर है तेरे पास तो बांट प्यार की दौलत,
पछताएगा फिर बेवफ़ा के नाम सड़ा के।

ज़िंदा है तो ज़िंदगी से जी भर के प्यार कर,
बाद में टांग देंगे दीवार पर तस्वीर बना के।

'देहाती' हलाकान हालात से फ़िलहाल सुनो,
कोई तो पुछ ले हाल, अपना हाल सुना के।।

भूख

"भूख"
तन की आवश्यकता होती है
मन की आवश्यकता होती है,
"भूख"
स्वाभाविक है प्रक्रिया है।
"भूख"
जगाती हैं सुलाती नहीं है,
उठाती है, बैठाती नहीं है।
"भूख" ने
सपने दिखाए, रास्ते दिखाए,
साहस दिया और संघर्ष करने की क्षमता दी।
"भूख"
असहज हुई तो उत्तेजना दी,
धैर्य को धिक्कारा और संस्कारों विदा किया।
नैनो से नीर छिन ज्वाला भर दी।
सहज सोच को मरोड़ कर, कुंठा की गठरी में भर दिया।
"भूख"
जब विकराल हुई तो कई सभ्यताओं की चूलें हिला दिया।
संयम रसातल में जा पहुंचा, विद्रोह का ज्वालामुखी फट गया।
नियंत्रण की साबूत दीवारों को, आक्रोश के पैने नखों ने नोच डाला,
स्मृति शुन्य हुआ आदमी और अंधेरे को और अंधेरों में ढकेल आया,
जहाँ से नई सुबह का सूरज भी दिखाई नहीं देता।।

समय है विचार का, "भूख" के समाधान का।
भूख तो है, किंतु वह विकृत होकर
विकराल रूप धारण करने से पहले ही
शांत हो जाए, सहज हो जाए।।

अमर हो जायेगा

पर्यावरण दिवस पर
एक करामाती नेता के चंगुल में फंसे
एक नवजात वृक्ष के विनय पर न हंसे।
भाई, थोड़ा सा जल पिला दो,
मर रहा हूँ, कुछ देर जिला दो।
तभी नेता का अनुचर,
होता अतिरिक्त मुखर।
अगर तुम मर गए तो
तुम पर आत्महत्या का
इल्ज़ाम थोंपा जाएगा।
ज़िंदा रह बेटा, तुझे और
तीन गड्ढों में रौंपा जाएगा।
ज्यादा हत्या दोष न हो
इसलिए नेता (जी)
हर गड्डे में तुम्हें ही रोंप कर
इतिहास रचने वाले हैं।
वे भली-भांति जानते हैं
अभी रोंपे वृक्षों में से
एक नहीं बचने वाले हैं।
अर्थात तू तो शहीद हो जा
तेरा भाग्य संवर जाएगा।
यह सच है तू मर जाएगा।
किंतु,..... नेता के साथ हर तस्वीर में
छप कर, अमर हो जाएगा।।

आज कुछ अलग सी बात है

आज कुछ तो अलग सी बात है।
आज सूरज धधकता अग्निपुंज नहीं
पथ दिखाता सहचर सा है।
आज फुलवारी में फुदकती
चिड़िया की चहचहाहट पर क्रोध नहीं आ रहा है,
मन को गुदगुदाता लग रहा है उनका कलरव।
झाड़ियों से प्रतीत होते पुष्पित पौधे
आज स्वागत को आतुर लग रहे हैं।
आज, मुझे देखकर कभी मुँह सिकोड़ने वाले
द्वार पट अपनी दोनों बाहें फैलाएं
खड़े हैं मुस्कुराते हुए।
आज, हौले-हौले चलती पवन
मेरी बिखरी लटों को संवारने की कोशिश में है।
आज गाय के बछड़े का रंभाना भी सुर लिए हुए है।
आखिर
कुछ तो आज अलग सी बात है।
मैंने स्वयं से पूछ लिया, आखिर क्या बात है?
मन ने उत्तर दिया
ये तेरे अपने जज़्बात है।
उत्साह है तुम्हारा अपना, उल्लास है अंतस का।
प्रकृति स्थिर है हमेशा,
तुम्हारे भाव ही प्रभाव देते हैं, सबके हाव भाव को।
आज तुम स्वयं स्फूर्त हो, कुछ अलग सी आभा लिए।
बस और कुछ नहीं आज।

उमंग

देश और दुनिया लड़ रही है कोरोना वायरस से जंग,
अनुशासित हो समर्थन हमारा व्यवस्था ना हो भंग।

लाकडाऊन हमको ही बचाने की एक कोशिश है दोस्तों,
हताशा छोड़ कर जीवन्त रहो मन में रखकर उमंग।।

नमस्कार का संस्कार अब वैश्विक व्यवहार बन गया है,
अंतर का मंतर अपनाएं पंडे पुजारी और मौलवी मंलग।।

सक्षम बनाया ईश्वर ने अक्षम का सहारा बन कर देखो,
भूखे को भोजन प्यासे को पानी बेघर का आवास प्रसंग।।

शिक्षा संस्कार और संस्कृति का बेहतरीन नजारा है,
दान दक्षिणा और दया के क्षेत्र में उदार है कोई नहीं तंग।।

सच्चे सिपाही और स्वास्थ कर्मियों के ऋणी है हम सभी,
महामारी से खबरदार करते जूझते खुद उस आपदा के संग।।

हम घर में ही सुरक्षित है सावधान करें नासमझ लोगों को,
प्रार्थना करें कि अहित ना हो से प्रभु हितकारियों के संग।।

गाँव पर उँगली मत उठाना

तब घर वालों ने रोका था,
और गाँव वालों ने टोका था।
अपनों का साथ मत छोड़,
शहरों से नाता मत जोड़।

तब तुम हम पर हंसे थे,
शहरी मोहजाल में फंसे थे।
चौक की चकाचौंध में गुम,
अंधेरी खोली में रहे तुम।

करने दुनिया को मुठ्ठी में,
जलते हुए श्रम की भठ्ठी में।
खाया पिया पहना उड़ाया,
खाली हाथ है क्या बचाया।

माना गाँवो में अभाव से जूझते हैं,
अपनों का हाल तो पूछते हैं।
तुम्हारे जाने से जगह हुई खाली,
कुछ दिनों में हमने आदत बना ली।

जितने है उनसे काम चलाओ,
जो गये छोड़ उन्हें भूल जाओ।
जो बीत गया तुम वो किस्सा हो।
भूली बिसरी यादों का हिस्सा हो।

तुम न थे तो छप्पर भी छाया नहीं,
गिरती दिवार को उठाया नहीं।
अब तुम बिन बुलाए आ गए,
पूछते हो मेरे घर बार कहाँ गए।

जिसने कोसा न हो वार्ड नहीं है,
यहाँ तुम्हारा राशन कार्ड नहीं है।
अपना समझ अपना लेंगे,
कुछ दिन मिल बांट खा लेंगे।

चले हो मीलों, आगे भी चलना है,
किस्मत में तो बस छलना है।
काश, अफवाहों से नहीं डरते,
एक जिंदगी के लिए यूँ नहीं मरते।

आत्म निर्भर बनने के सपने हो,
वहीं रहो जहाँ तुम्हारे अपने हो।
निकले हो तो बनकर दिखाओ,
लौट कर बुद्धू घर को मत आओ।

समय है, काश तुम समझ पाओ।
थोड़ा ही सही कमाई बचाओ।
जहाँ हो वहीं रहो, पैदल सफर मत करो,
तुम सक्षम हो, बच्चों को आहत मत करो।

आ ही गये हो, गाँव की माटी को नमन करो,
श्रम से सींचो, बंजर भूमि को चमन करो।
सीख जाओगे दो जून की रोटी जुटाना,
आज़ के बाद गाँव पर उँगली मत उठाना।

पलक

पलक जब उठती है तो देखती है अपलक,
दिव्य प्रकाश पुंज जो, जीवन दर्शन देता है।

पूरब से सूरज की किरणें
प्रेरित करती है यात्रा के लिए
चलो-चलते रहो,
तुम्हे कोमल तृण से सख्त पर्ण तक
देखना है परिवर्तन प्रकृति का।

तुम्हे कोमल त्वचा से
झुर्रियों तक की यात्रा करना है।
तपती तपन में तपना है,
झर-झर बरसते बरसाती पानी में भीगना है।
हाड़ कंपाती ठंड को भी भोगना है तुम्हें।

कई हदें अपनी हद पार करेगी
मुसीबतें जीना दुश्वार करेंगी।
पार करना है तुम्हें भी हर हद,
धुंधलाती सूरज की रोशनी
का साक्षी बनने के लिए।

यह प्रकाश का अंत नहीं अंतराल है, नई सुबह तक के लिए।
हर नई सुबह पर फिर खोलना है पलक।

हम तो "देहाती" हैं

हाँ, हम तो देहाती हैं,
सभी सरकारी नियमों,
निर्देशों को ध्यान रखते हैं।
अनुपालन करते हैं।

कभी ग़लत काम नहीं किया, कभी ग़लत दिशा में नहीं गया,
कभी ग़लत सलाह नहीं दी, कभी ग़लत सलाह नहीं सुनी।
सड़क पर अपनी ही दिशा से चले,
गति अवरोधक पर थमे, लालबत्ती पर ठहरे।
टिकट खिड़की पर क्रम से पहले
कभी कोशिश नहीं की टिकट लेने की।
बस में भी किसी महिला, दिव्यांग,
वरिष्ठ नागरिक की बैठक पर अतिक्रमण नहीं किया।

हम देहाती हैं,
ज़मीन पर पालथी मार कर बैठ गए,
बड़ों को सम्मान दिया, छोटों को आशीर्वाद दिया।
सगों से गले मिले तो
गैरों से हाथ जोड़कर नमस्ते किया।
शौक से पान गिलौरी चबायी पर, थूक दान में ही थूका।
उगते सूरज का अभिनंदन किया,
डूबते सूरज का आभार माना।
धरती माँ को माथा टेका, नदियों के जल से आचमन किया।

हम देहाती हैं,
बाहर से आकर पादुकाएं, घर के बाहर ही रखी,
पहले पांवों को धोया, फिर घर में प्रवेश किया।
चाय सुड़प कर पी तो शरबत गटागट पी लिया।
भोजन से पूर्व की प्रार्थना,
पश्चात ईश्वर का आभार व्यक्त किया।
माता बहन को आदर दिया,
बेटियों को दुलार और वृद्धाओं को सहारा दिया।

हम देहाती हैं,
आज़ बड़ा अच्छा लग रहा है
अपने "देहाती" होने पर, अनायास ही गर्व होने लगा है,
क्योंकि उनकी सारी की सारी, चालाकियाँ धरी की धरी रह गई।
झूठ बोल ही नहीं सकते, सच तो जमाना जानता है।
तुम्हारी रफ़्तार भी बेमानी है, दौड़ ही नहीं पा रहे हो।
किस को आँख दिखाओगे, तुम्हें कोई देख ही नहीं रहा है।
किस से मुँह बिचकाओगे, मुँह छुपा कर रखना पड़ रहा है।

हम देहाती हैं,
इसलिए समझने और सीखने को तैयार रहते हैं हरदम।
अति आत्मविश्वास को हावी नहीं होने दिया खुद पर,
तभी हम बचे रहे बुरे हादसों से, बड़ी मुसीबतों से।
दो वक्त की रोटी में गुज़ारा करने वाले हम, आज भी संतुष्ट हैं।
क्योंकि जीने के इतना ही काफी है।
आश्वस्त हैं हम कल के लिए भी
क्योंकि हम भरोसा करते हैं अपने आप पर।।

ठहरो

आज कैसा लग रहा है ठहराव,
चौराहे पर लगी लाल बत्ती
पर लानत भेजते रहे,
घर की देहरी में प्रवेश के समय
दादी माँ का टोकना
चरण पादुका से विमुक्त होकर आओ,
भोजन से पूर्व कि प्रार्थना
और संयुक्त परिवार में अपने क्रम की
प्रतीक्षा बोझिल लगती थी ।
ठहरना और वह भी अनचाहे,
मन को उद्वेलित करते भाव
धैर्य का सर्वथा अभाव।
प्रतिस्पर्धी युग में दौड़ते हुए ठहरना
किसी त्रासदी से कम प्रतीत नहीं होता।
लेकिन एक अनवरत जीवन यात्रा
के लिए परिस्थिति जन्य ठहरना पड़े तो
अपनी इच्छा से ठहर जाओ,
समझो, यह तुम्हारी परीक्षा है
जिसमें उत्तीर्ण होकर ही निरंतर रह सकते हो,
यदि आज अपनी मर्जी से नहीं घर पर ठहरे
तो अगला ठहराव आपकी मर्जी का नहीं होगा।
अगर यह ठहराव हमारे लिए है
तो ठहरना अच्छा है।

सूरज भैया

ओ सूरज भैया तुम्हें खूब समझा रही हूँ,
पर तू समझ न पावे।
झुलस रहा है तन, काहे आग बरसावे।।

कंडा-काड़ी सब सूखी, हाँडी मेरी सूख गई।
रुखा सुखा खाना देख, बैरन भूख भी गई।
लाख समझाऊं पर, तू समझ ना पावे।
झुलस रहा है तन, काहे आग बरसावे।।

मन ना लागे अब, मनरेगा में म्हारो,
वो भी घर में बैठो है, लेकर नाम थारो।
दाल आटा नाहीं, खाना कैसे पकावे।
झुलस रहा है तन, काहे आग बरसावे।।

तेरी तेज तपन में, मुँह का स्वाद गया,
कौन है बैरी हमारा, मुझसे बैर कर गया।
हाल बेहाल कर दिया, तोहे लाज ना आवे।
झुलस रहा है तन, काहे आग बरसावे।।

बदरा छाए नहीं काहे, या भी हमको भरमावे,
भून कर ही मानेगा के, हमे ही आँख दिखावे।
सूरज भैया तुम्हें, खूब समझा रही हूँ,
पर तू समझ न पावे।
झुलस रहा है तन, काहे आग बरसावे।।

तुम-सोचो!

आँखें मलते हुए उठा होगा
सूरज की आँखें लाल थी।
नन्हें शिशु सी कोमल कोमल
उसकी नरमी भी कमाल थी।

कोंपलों से ढलते हुए तुषार
करता रहा मखमली दुलार,
चोंच से चुहल कर रही मैना
कोयल को चढ़ा मौसमी बुखार।

मंद-मंद चलती हवा सहलाए,
रौद्र हो सूरज त्वचा झुलसाए।
बादलों को आमंत्रित किया कौन?
उफ़ बेवजह दहाड़े और डराए।

सूरज ने झुककर संध्या से
प्यार का इज़हार किया।
संध्या बोली आ जाओ आगोश में
हमने कब इंकार किया।

चाँदनी रात में चाँद की लुका-छिपी
तारों को जब नहीं सुहाती।
उपद्रव करते हैं खूब मेंघों को छेड़
माहौल बनाते हैं बरसाती।

ठहर जायेगा

सारी दुनिया एक अनजाने भय से ग्रस्त है।
तिनका ताड़ राई पहाड़ सब के सब पस्त है।
चूले हिल गई दुनिया के बादशाह की भी,
दिखता नहीं है मगर दुश्मन ज़बरदस्त है।

ठहरी हुई है ज़िंदगी मगर रुकी नहीं है,
चल रहें हैं मंज़िल मिलेगी यकीं नहीं है,
अंधेरा रात का कम बातों का ज्यादा है भाई,
अफ़वाहों का आकाश और ज़मीं नहीं है।

सतर्क रहो बेवजह मत निकलो घर से,
ख़बरें ख़तरनाक आ रही गाँव से शहर से।
लौटा कोई ख़ाली हाथ कोई उम्मीद लेकर,
ज़िंदगी दांव पर लगा दी मौत के डर से।

समय ठहरता नहीं यह वक्त गुजर जायेगा,
टुटा हुआ आशाओं का घर संवर जायेगा।
सावधानी, संयम और सहयोग देते रहे हम,
कोरोना वायरस का तांडव ठहर जायेगा।

नमन हैं तुम्हें हे कोरोना के योद्धा सिपाही,
जीवन देने दुसरों को अपनी जान गंवाई।
आभार व्यक्त करते हैं अभिनंदन करते हैं,
आप ही के कारण हम ने भी हिम्मत जुटाई।

जो जो जब होना है वो वो तब होता है,
आज़ तो अपना है पगले तू क्यों रोता है,
नज़र उठाकर देख ये वही दुनिया है 'देहाती',
जहाँ ईसा अपना सलीब खुद ही ढोता है।

सूरज फिर ढलान पर है

टिक टिक टिक
समय की प्रतिध्वनि नहीं, घड़ियाल की चाल है,
समय तो बस शनैः-शनैः, सरकता चला जाता है।

कदम आगे बढ़ते हैं, रास्ता कटता जाता है,
आप ठहरे तो समय नहीं, ठहरता, सफर ठहर जाता है।

भोर की लालिमा लिए, सूरज का अवतरण होता है
ले एक आशा की किरण, विश्वास का विकिरण करता है।

मंज़िल पाने के लिए हमदम मचलना पड़ता है,
रास्ते कहीं नहीं जाते, ख़ुद को चलना पड़ता है।

अपने तेज को लेकर, वो श्रेष्ठ मुकाम पर है,
समय ने बदला समीकरण, सूरज फिर ढलान पर है।

गमन अस्तांचल की ओर, समापन का संकेत नहीं,
नवसृजन के उत्साह का, पुनर्जन्म की नवचेतना है।

पुनः पहले पहर के आल्हादित करते कलरव का,
अभिनंदन और वंदन, नव प्रयास का... नवसृजन का था...।

ईमानदारी- एक जीवन शैली

पथ प्रवर्तक संकीर्ण मानसिकता से परे,
लोभ मोह के समीकरण के छोड़ नखरे,
चरित्र निर्माण, सद्भावना का कर प्रचार,
मात्र ईमानदारी के साथ व्यवहार करें,
उनका पल-पल उत्सव होली दीवाली है,
जिनके मन में ईमानदारी एक जीवन शैली है।।

पारदर्शिता सदा हर कार्य का आधार हो,
दैनिक लेन देन हो या वृहद व्यापार हो,
आप से लोगों में जागरूकता पैदा हो सदा,
कर्म और धर्म आपका ईमानी व्यवहार हो,
मन में हो संतोष तो सब भरा वर्ना खाली है,
हर्षित हैं वे जिनकी ईमानदारी एक जीवन शैली है।।

सावधान रहो तुम हरदम रिश्वत खोरों से,
न मिलाओ हाथ कार्य समय के चोरों से,
चापलूसी भी भ्रष्टाचार का हिस्सा है सुनो,
संबंधों के कारण कई पद भरे हैं नाकारों से,
आचरण में दाग लगा, कहीं चादर ही मैली है।
सफल हैं वे जिनकी ईमानदारी एक जीवन शैली है।।

चलो बचपन में चलते हैं

चलो, बचपन में चलते हैं!
उठते हैं, चलते हैं,
हँसी ठिठोली करते हैं।

मस्ती में मचलते हैं,
गिरते हैं, संभलते हैं।
धक्का देते हैं गिरा देते हैं,
हाथ देते हैं उठा देते हैं।
दौड़ते हैं जीत जाते हैं,
उछलते हैं जश्न मनाते हैं।
कभी हार भी जाते हैं उससे,
जिसकी जीत देखना चाहते हैं।

बड़े बुजुर्ग हमें खूब समझाते,
बेटा गहराई पता ना हो तो
दरिया में छलांग नहीं लगाते।
हम हँस कर बातें टाल जाते,
जल के भंवरजाल में फंस जाते
तो वहीं बड़े हाथ बढ़ाकर बचाते।
बचपन में घुटने टेक देते हैं
घुटनों पर उन्हें भी ला देते हैं।

खड़े होने में हाथ बंटाते हैं,
हम चलो बचपन में जाते हैं।
जीत पर जितना हँसते हैं,
हार पर उतना ही अट्टाहास।
क्योंकि हारना हताशा नहीं
जीत के प्रति उपजा विश्वास।
बचपन में स्पर्धा तो होती है
किंतु ईर्ष्या का स्थान नहीं होता।

चलते चलते छिलते हुए पाँव,
फटी एड़ियाँ उँगली पर घाव।
ऊर्जावान ओजस्वी व्यक्तित्व
सफर ही ठिकाना और ठाँव।
मित्र तो मन के होते हैं,
अपनों को कहाँ खलते है।
समय ने दिया है न्यौता,,
चलो, बचपन में चलते हैं।

फिर उठते हैं
फिर उठाते हैं,
फिर गिरते हैं,
फिर संभलते हैं
चलो, फिर बचपन में चलते हैं।

सफलता

धरातल से शिखर का आकलन कर
बढ़ोगे तो डर जाओगे।
पहले कदम से आश्वस्त हो कर
दूसरा कदम बढ़ाओगे तो शिखर तक चढ़ जाओगे।।
सफलता का मूल क्रम में ही है,
विस्तार तो विचार से ही फलिभूत होता है।
संक्षिप्त मार्ग पर संकीर्णता का वास
और खंडित विश्वास होता है।
पथिक,
लक्ष्य कदाचित पा जाता है
किन्तु सफलता का आत्मीय आनंद नहीं पाता है।।
आप के प्रत्येक पद पर
आपके प्रयत्न का भार हो,
तय की गई दूरी का आपके प्रति आभार हो।
तभी आशीर्वाद की अलौकिक शक्ति
तुम्हारी भुजाओं को बलिष्ठ
और चरणों को चपल बनाती है।
विजय पताका फहराने में
ईश्वरीय आशीष पवन वेग बन उसे लहराती है।
यही सफलता सच्ची सफलता कहलाती है।।

एक नन्हा सा पल

एक नन्हा सा पल,
यानी विकसित
आने वाला कल।
भोर की ओंस,
अंजुरी भर जल
का समीकरण नहीं होती,
अंजुरी भर जल ना होता
किसी दरिया का दर्पण।
किंतु बुंद-बुंद बरसात कि
किसी प्रलय का प्रतिरूप
भी बन जाती है।
केदारनाथ केरल
के जल प्रलय साक्षी है।
हम देहाती
अपनी मातृभूमि को
नमन करते हैं
और कहते हैं,
हे माँ अपनी संतानों
का ख्याल रखना।।
प्रार्थनाएँ व्यर्थ नहीं जाती
यदि वो ह्रदय से की जाती।।
हम अपने संस्कारों को
तार्किक विचारों पर आजमाते हैं,
बस- वहीं हम गलत हो जातें हैं।

आज गौ गोबर से सने हाथ
कंडे की आग पर बने भात
की अपनी ही बात है,
आधुनिकता की गगनचुंबी
इमारतों
हवा में कुचाले भरती इबारतों
ने मस्ती को मसल दिया है।
युरोप अमेरिका और
जो हमें हमारी पारम्परिक
जीवन शैली का परिहास
करते नहीं थकते थे,
अब थक गए हैं,
अपनी भूल सुधारते सुधारते।।
मेरे गांवो का देश भी
फिर अपनी बुनियाद को
देखना-सुनना चाहता है।
वैसे ही,...
शहर तो,..?
सदियों का समीकरण
बनाने वाले भी
अब समेट लेना चाहते हैं।
एक नन्हा सा पल।।

कुछ कहना चाहता हूँ मैं

संकट की घड़ी में नहीं चुप रहना चाहता हूँ मैं।
आज कहने दो मुझे, कुछ कहना चाहता हूँ मैं।।

चपल शब्द आलेखित भाव,
मन कलुषित है लिए दुर्भाव।
स्वयं के जीवन पर लगा दांव,
न चलेगी तुम्हारी छिद्रीत नाव।
बाधित जल उवाच कि बहना चाहता हूँ मैं।
आज कहने दो मुझे कुछ कहना चाहता हूँ मैं।।

भोर भास्कर से हो भय मुक्त,
स्यामल संध्या शीतलता युक्त,
अंबर अवनि क्षितीज संयुक्त,
निर्दोष शशि असमय हो लुप्त।।
विधि क्रम को भी अब सहना चाहता हूँ मैं।
आज कहने दो मुझे कुछ कहना चाहता हूँ मैं।।

दानव दैत्य मनुज संतान सुन,
सर्वनाशी समाज के शैतान सुन,
श्वेतांबर स्वयं है भगवान सुन,
खाकी भी खड़ी सीना तान सुन।
इनके ही संरक्षण में आज रहना चाहता हूँ मैं।
आज कहने दो मुझे कुछ कहना चाहता हूँ मैं।।

रिपु रौद्र किंतु ढहा अवश्य है,
शिव शंकर की शक्ति रहस्य है,
महाकाल के शरणागत देश है
शक्ति हीन नीर निरंक मत्स्य है।
हे संकटमोचक संकट को सहना चाहता हूँ मैं।
आज कहने दो मुझे कुछ कहना चाहता हूँ मैं।।

स्वच्छ स्वस्थ सर्व विधान हो,
समाधान अपेक्षु सावधान हो,
जीवन की लालसा का भान हो?
अनुशासन का सदा प्रावधान हो।
राष्ट्र प्रहरियों सा चरित्र अपनाना चाहता हूँ मैं।
आज कहने दो मुझे कुछ कहना चाहता हूँ मैं।।

तुम

तुम क्या हो?
एक हाड़-माँस का पुतला?
जो भोर से दोपहर और दोपहर से रात तक अपने उदरपोषण
और अंतस की अपेक्षाओं को पोषित करने
समय से समझौता करते हुए चल रहे हो?
तुम्हारे होने न होने से कोई फर्क नहीं पड़ता-
ऐसा सोचते हो तो हताशा के हाथों में हो।
तुम तो सारे घर को जगाते घड़ियाल हो।

प्रात: की ऊर्जा हो,
किसी की सांध्य प्रतीक्षा हो,
तुम घर की रसोई के व्यवस्थापक हो।
कुछ नन्हे हाथों को थामती सुदृढ़ उंगलियाँ हो,
धुंधलाती आँखों की ज्योति हो,
किसी अधुरे का आलिंगन हो
अरे तुम अपने परिवार के सिंघम हो।

पाँव के छाले प्रताड़ना के प्रमाण नहीं
तुम्हारे संघर्ष के प्रशंसा-पत्र है,
खुरदुरी हथेलियों से किसी का कल संवारने वाले
उसके स्नेहल स्पर्श का भान तुम्हें नहीं है,
मात्र उसे है जिसकी स्वप्निली आँखों में
तुम हो, बस तुम हो।

उठो! चिड़िया चहक रही है,
हे श्रमवीर, शीतल पवन
तुम्हारे लौह काया का आचमन कर फिर
नवनिर्माण के लिए स्फूर्त करना चाहती है तुम्हें।
कल न जाने क्या हो
किंतु तुम सबके आज हो, सबकी आवाज हो।।

क्षितीज

आकस्मिक आपदा प्रबंधन का
निःशुल्क प्रशिक्षण शिविर
लगा है घर-घर में।
मितव्ययता का संदेश दिया
सब ने एक दूजे को आँखों ही आँखों में।
समय के संकट का भान,
अक्षम और सक्षम को भी है,
सब शांत है किन्तु अभी।

माँ की एक ममतामयी धुड़की पर
भड़क जाने वाला भोलू भी
भोलाराम बन उपदेश दे रहा है,
Stay home.

स्वाद की मरीचिका में उलझकर
उजुल फिजुल व्यंजनों को चटकारते चाचा जी को
आज घर की चटनी खूब भा रही।
उनके मुखारविंद से
उपदेश देती आवाज आ रही-
"सादा जीवन उच्च विचार।"

"झट से बोलो मेरे पास समय नहीं है"
जैसे कटु शब्दों से झटकारते महाशय
पत्नी के प्यार को
पल-पल परखने का प्रयास कर रहे हैं।
क्या ये वही महानारी है
जो मेरे अहम को मेरा ही वहम समझ मुस्कुरा देती थी..

उफ़, इनके कोमल हाथों ने
जीवन के कितने कठोर कार्य संपन्न किए हैं,
आज उन हाथों को चूम कर
अपने अक्षम्य अपराधों का प्रायश्चित करना चाहते हैं,
अपने हाथों से चूल्हा जला कर
मीठी शक्कर डाल कर, कड़वी चाय बनाते हुए।
हमेशा की तरह क्षमा करती
भार्या के यह शब्द प्रसाद से लग रहे हैं कि
"तुमसे तो इतना भी काम नहीं होता,"
जाओ अपने हाथों को
20 सेकंड तक साबून से साफ करो।
मैं अच्छी चाय बना कर लाती हूँ।

बालकनी पर चहकती चिड़िया को
अक्सर उड़ा देने वाले
आज उसकी चहचहाहट का
सूक्ष्मता से अध्ययन कर रहे हैं।
कि एक आवाज निकालने के लिए
वह कितनी बार चोंच खोलती है।
जूतों की पालिश का ही ध्यान रखने वाले
अब संबंधों की पालिश कर रहे हैं।

"जा अपनी मम्मी से पूछ ले"
कह कर अपना पिंड छुड़ाने वाला
पिता प्रतीक्षारत है,...
कि उसका पुत्र उससे कुछ तो पूछ ले।
समय बहुत बलवान है।
आसमाँ जमीन पर है
और
धरती का शौर्य का आसमान छू रहा है,,
संबंधों का "क्षितीज"
नई भोर का सुखद संदेश दे दे रहा है।
"जान है तो जहान है।"

प्यार चाहिए

जीने के लिए नहीं दौलत बेशुमार चाहिए,
ज़िंदगी में तो बस अपनों का प्यार चाहिए।।

सबका आशियाना बनाने वाले इंसान सुन,
ठहरने के लिए ख़ुद का भी घर-बार चाहिए।।

मुफलिसी मुँह उठाकर चलने तक नहीं देती,
कल की रोटी का कुछ तो आधार चाहिए।।

महामारी से कुछ सबक सीखा क्या तुमने,
बोलिए शहंशाह किसे मोटर-कार चाहिए।।

आसमाँ में घर बनाने की सोच है रहा जो,
उसे भी ज़िंदगी के चंद लम्हे उधार चाहिए।।

फासले भी अहमियत रखते हैं कभी-कभी,
बस दरमियानी हो दिलों में तो प्यार चाहिए।।

वो भी ज़िंदा है आना पाई कौड़ी के खर्चे पर,
जो कहता था रोज मुझे रुपए हज़ार चाहिए।।

दवा और दुआओं के साथ ज़िंदगी में आदमी के,
सामाजिक समझ और नैतिक व्यवहार चाहिए।।

वो भी मजे से भजन कर रहे हैं भगवान का,
कभी रोज जिन्हें करोड़ों का व्यापार चाहिए।।

दीपदान

दीप जलाने के आव्हान पर एक अनोखी बात थी।
राष्ट्र हित में एक-एक कुटिया भी महलों के साथ थी।।

तपती धूप को सहकर जिसने रचा घरौंदो का भाग्य।
उस अभागी कुटिया के हिस्से में तो अंधेरी ही रात थी।

विश्व को नया आधार दिया स्वयं निराधार रहकर।
श्रमिक तेरे श्रम और समर्पण की कुछ तो बिसात थी।

गाँव से आकर शहरों को आकार देने वालों के लिए,
विपदा में नहीं जागी, इंसानियत या पत्थर की जात थी।

अंधेरों में भटकते स्वयं के अस्तित्व से अनभिज्ञ,
गर्व है सर्वहारा की सद्बुद्धि तो राष्ट्र के साथ थी।

हे राष्ट्रनायक संकट में सबको साथ लेकर चलने वाले,
बड़े आश्वस्त हो पर कुटिया को न लगे वो अनाथ थी।

यह युद्ध है

यह युद्ध है स्वयं से स्वयं के लिए।
अब समय ही नहीं शयन के लिए।।

भूख को देखा भोजन से रुठते हुए?
भोर कि लालिमा के साथ उठते हुए।
एक आग के लिए कई अंगारों पर चला,
संभला तो हूँ पर हर पल टूटते हुए।।
नीर ही नहीं शेष शुष्क नयन के लिए।
अब तो समय ही नहीं शयन के लिए।।

उसे देखा आहत स्व पीड़ा भूल गया,
मानव सेवा हेतु संकल्पित झूल गया।
मेरा ईश्वर आज ही मुझसे सब माँगें,
मेरा प्रण मेरी प्रतिष्ठा समूल गया।।
लौटा रहा हूँ उपकार जो उसने दिए।
अब तो समय ही नहीं शयन के लिए।।

सपने समय की गर्त में खो गए,
अपने बिखरे गैर अपने हो गए।
संसार तो परखता है कसौटी पर,
हमने पाया वही जो हम बो गए।।
गति ने पल भी नहीं दिया चयन के लिए।
अब तो समय ही नहीं शयन के लिए।।

प्रकाश कृपा है अधिकार नहीं,
जीवन कर्त्तव्य है व्यापार नहीं।
लेन देन मात्र मरिचिका है मित,
संबंध सभी मुफ्त उपहार नहीं।।
आवश्यक है पर अंतिम दहन के लिए।
अब तो समय ही नहीं शयन के लिए।।

दीपक

दीपक तुम हो तम् को हरने वाले,
उल्लास जीवन का भरने वाले।

रुके कब हैं विपदा के रोकने से,
प्रगति पथ पर सदा चलने वाले।

राष्ट्र हित में एक योगदान सबका हो,
बुझे न दीप शौर्य पथ पर जलने वाले।

डुबते को तिनके का सहारा बहुत,
बलिदानी नहीं किसी को खलने वाले।

जीवन मरण उसकी की मर्ज़ी से है,
आस्था के प्राण नहीं निकलने वाले।

जो डरे तो आशाएँ भी धूमिल होंगी,
ठहरते नहीं उम्मीद पर मचलने वाले।

वक्त तो उनका भी नहीं हुआ 'देहाती',
विकट विपदा में थे जो संभलने वाले।।

प्रकृति को प्रणाम करो

जब रास्ते बहुत कठिन थे
तब जीवन बहुत सरल था,
अब रास्ते बहुत सरल है तो
जीवन बहुत कठिन हो गया।

तब इंसान हँसता मदमस्त
था तो रास्ते उदास थे।
अब रास्ते खिलखिला रहें हैं
तो इंसान उदास हो गया।।

भूख थी तो रोटियों की
तलाश ही मक़सद था तब,
अब भूख ही नहीं लगती जब
रोटियों का इंतज़ाम हो गया।

हवा का रुख़ ना समझे तो
उड़ गए हवा जिधर ले गई।
क़ैद कर लिया फिज़ाओं को
ऐ रोशनी भी हमारी हो गई।

सुख के सपने संजोए बैठे
प्रकृति का विनाश कर गए,
उसने दिखाया अपना तांडव
हम एक 'विषाणु' से डर गए।

विकास के नाम पर तुम
'देहाती' चाहे जितने काम करो।
प्रकृति ही सर्व शक्तिमान है
सब मिलकर प्रणाम करो।।

हाँ, माँगने की आदत है मेरी

चंदा से शीतलता माँगी सूरज से प्रकाश माँगा,
वृक्षों से छांव माँग ली, दोपहरी जब डर लगा।।

भूख ने भोजन माँगा, प्यास ने माँगा पानी,
दुःख ने सुख माँगा तो, सुख ने माँग ली परेशानी।

संस्कारों ने माँगा तो, जीवन साथी पाया,
सुखद संसार माँगा, गृहस्थी आगे बढ़ाया।

प्रेम माँगा मिला मुझे, साथ माँगा मिला मुझे।
पर माँगने से भी 'समय', नहीं मिल पाया कभी।

लम्हों को समेट कर, जिंदगी के सफ़र में,
जिया तो जरूर हूँ, सपने छोड़ अधर में।

कभी वो भी पाया मैंने, जो कभी माँगा ही नहीं,
वह भी मिल गया मुझे, जो कभी चाहा ही नहीं।

ईश्वर ने दिया तो खूब, सब समेट नहीं पाया,
जितनी औकात थी मेरी, उतना ही हिस्से आया।

दो हाथ दिए मन बड़ा, तन दो पाँव पर खड़ा।
समझना कठीन अब, मैं ठहरा खाली घड़ा।

ईश्वर कृपा करना तुम, जीवन गरल पीना पड़े,
दया करना बस इतनी, 'दया' पर ना जीना पड़े।

दया के नाम पर हाथ, उठता है जिन जिनका,
स्वाभिमान छिन्न भिन्न करते, अस्तित्व तिनका तिनका।

प्रभु ने सक्षम बनाया है, उस का मान-सम्मान करो।
सामाजिक दायित्व है, जीयो और जीने का आव्हान करो।

दान एक हाथ से दो, दुजे को भान न हो कभी,
मन संतृप्त हो केवल, किंचित अभिमान न हो कभी।

दया कि कल्पना मात्र से, याचक स्वत: डर जाता है,
मृत्यु पूर्व ही वह प्राणी, आत्मग्लानि से मर जाता है।।

हाँ माँगता हूँ कबीर, संत संगत हो जाय,
मैं स्मरण करूँ सदा, और जग दूँ बताय।
साईं इतना दीजिए, जा में कुटुंब समाय,
मैं भी भूखा न रहूँ, साधू न भूखा जाय।।

कलम

आज मैं, कलम...
हाँ मैं... व्यथित हूँ,
अपने अतीत से
वर्तमान तक सृजित किए अनेक ग्रंथ।
कथा, कहानी, साहित्य, समाचार।
हाँ, नित नए परिशिष्ट पर
कभी आपत्ति नहीं थी किसी को,
क्योंकि
जब जिसने भी कलम उठाई
तो उकेरा साहस, सौहार्द,
संयम, संस्कृति, संस्कार और
सदाचार सहित सद्कार्य ही।
विघटन, विनाश, विरोध और विद्रुप्ता को
स्थान नहीं दिया।
किंतु अब मैं स्वयं को
असुरक्षित असहाय पाती हूँ,
क्योंकि प्रतिस्पर्धा से
उपजी प्रतिद्वंदिता ने
मेरे मौलिकता पर ही
प्रश्न चिन्ह लगा दिया है।
स्वार्थी लोगों हाथों में
नाचती अपने अस्तित्व को ही
तलाशती फिर रही हूँ मैं।
आज मैं कलम बहुत व्यथित हूँ।।

आमंत्रण

सूरज
स्वयं ही उदित नहीं होता।
अनंत अपेक्षाएं आमंत्रण देती है
कि प्रकृति का प्रथम आचमन
सूर्य प्रकाश से हो।

चाँद भी यूँ ही नहीं
भटकता रात भर।
वो जागती आँखों का
सपना और बैचेन दिलों का
अपना बन कर चलता रहता है।

हवा को क्या पड़ी है
लहर-लहर लहराने की,
वो मंद-मंद मुस्काती
पड़ी रहती माँद में,
किंतु सांसों में फँसी
जिंदगी की फाँस को
सुलझाने उलझ जाती है, झंझावातों से।

फिर हम क्यों हैं अनमने से?
आँखों में आशा,
जिह्वा पर जोश,
हाथों में इच्छाओं के अस्त्र
और कदमों में दम रख
तैयार हो जाएँ हम,
हर स्थिति का सामना करने।

हमारे साथ हैं
वो सूरज, वो चाँद,
यह धरती और अंबर।
तो उठो
और
उल्हासित मन से आवाज दो।
जीत जायेंगे हम हर जंग,
सारे भारतीय हैं संग-संग।

जीव रक्षा

चिड़िया चहचहा रही है
हमसे कुछ कह रही है,
पानी ही पिला दे प्यारे
हमारी जान निकल रही है।

रही जिंदा तो फुदकती
मुंडेर पर बैठ मैं कहती,
हे जीवन देने वाले दाता
जल न देता तो मैं न रहती।

प्राणी की सुनता प्राणवान
मृत क्या देगा जीवनदान।
तू सुनता नहीं कुछ भी किंतु
समझता है, संकट में हैं प्राण।।

जीव रक्षा का जिसे भान,
इंसान रूप में वो भगवान।
सेवा ही संस्कार है जानो,
दया करते सदा दयावान।

ईश्वर ने प्रकृति को सहेजा
सौंदर्य वृद्धि हेतु हमें भेजा,
पंथी पक्षी संवाद सुरीला,
इंसां तू कुछ लेजा कुछ देजा।

जीवन को चाहिए जल,
तभी है आज और कल,
विद्रुप्त व्यक्ति जरा संभल
नष्ट न हो जाए सकल।।

दायित्व हमारा प्राणी रक्षा
हमारे प्रयास संग प्रभु इच्छा,
संसार मोह-माया मात्र नहीं
आज की रक्षा कल की प्रतीक्षा।।

विजेता

एक कदम
दो कदम,
फिर कदम दर कदम,
ये कदमों की कदमताल नहीं
सफर की शुरुआत होती है।
कदमों को विश्वास मिल जाए
मन का तो तन भी
समर्पित हो जाता है।
सफलता यूँ ही नहीं मिलती
सोने की तरह जलना पड़ता है,
लोहे की तरह गलना पड़ता है,
हीरे की तरह कटना पड़ता है,
झरनों की तरह बहना पड़ता है,
वक्त की दोधारी तलवार पर
जिम्मेदारियों का बोझ लेकर
निरंतर चलना पड़ता है।
और जो चलकर अपनी
मंजिल पा जाता है।
बस-- बस-- वही विजेता बन पाता है।।

आओ चलें

संकीर्णताओं का ओढ़ा हुआ दुशाला हटाते चलें।
आओ हम आँखों से भ्रम का जाला हटाते चलें।।

छूने से प्यार फैलता था
अब कोरोना फैल रहा है,
संयम व सावधानी बरतें
शेष सब कुछ फेल रहा है।
'दो गज का फासला' का सुझाव आजमाते चलें।
आओ हम आँखों से भ्रम का जाला हटाते चलें।।

शाकाहारी भोजन करें बस
तामसी भोजन से बचे रहें,
प्रकृति का ही आदेश है ये
मिलकर उसे सहयोग करें।
सृष्टि के संवर्धन में अपना भी हाथ बटाते चलें।।
आओ हम आँखों से भ्रम का जाला हटाते चलें।।

प्रदुषण मुक्त इठलाती हवा
निर्मल जल कल कल धारा,
रवि प्रकाश से भी निर्बाध अब
आलोकित होता संसार सारा,
धरती की हरियाली के हम गीत गुनगुनाते चलें।
आओ हम आँखों से भ्रम का जाला हटाते चलें।।

धैर्य धारण कर संज्ञान ले लेते
राष्ट्र हित की बात तुम कर लेते,
जीवन बर्बाद करना ठीक नहीं
योद्धा बन इसे न्यौछावर कर देते।
बलिदानी राष्ट्रभक्तों के नाम की ध्वजा फहराते चलें।।
आओ हम आँखों से भ्रम का जाला हटाते चलें।।

ना बाबा

हसीना के नाम पे लड़वा बाबा।
आशिकों के कपड़े फड़वा बाबा।

होने दे जूतम पैजार रोज़ रोज़,
सिर के बाल भी झड़वा बाबा।

प्यार मोहब्बत के किस्से हज़ार,
ईश्क का स्वाद बड़ा कड़वा बाबा।

खुल्लम खुल्ला का दौर है,
राह में अंड़गे ना अड़वा बाबा।

लैला-मजनूं शीरी-फरहाद और
हीर-रांझा सा मत सड़वा बाबा।

आज एक, कल दूसरा सब्जेक्ट,
रोज़ नया आफर जड़वा बाबा।।

जय बोलो

हर दिशा में
संकट
विकट
रक्षा हेतु
ईश्वर भी
न होंगे प्रकट।
स्वयं
तुम ही हो
ईश्वर का प्रतिरूप।
अनेक रूप
धारण कर
विपदा परखती
तुम्हारी क्षमता,
तुम्हारा धैर्य,
तुम्हारा विवेक,
तुम्हारा समर्पण,
तुम्हारी नैतिकता
तुम्हारा विश्वास,
तुम्हारा सहयोग,
तुम्हारा त्याग,
तुम्हारा अनुराग।
देश हित में
युद्ध है आज,
और तुम योद्धा हो,

लड़ना है
तुम्हे स्वयं से,
स्वयं लालासाओं से,
इच्छाओं से,
आवश्यकताओं से
लिप्साओं से,
जीतना है स्वयं से।
क्या ऐसा कर पाओगे?
हाँ
यदि
तुमने ऐसा कर लिया
तो जीत जाओगे।
और तुम्हारी
अपनी जीत में ही छुपी हुई है,
मेरे राष्ट्र की जीत।
कोरोना वायरस से जीत।।
जीत का जज़्बा लिए
गुजारो घर में यह समय।
न कोई भय और चिंता हो।
खुशहाल
देश का हर परिंदा हो।

पेंसिल की नोक

लिखते लिखते
पेंसिल की
नोक का टूटना,
यह नहीं है मात्र घटना।
अपितु
आपकी परीक्षा है,
आपकी लगन,
आपकी प्रतिक्रिया,
आपके प्रयास की,
आपके मनोविज्ञान की।
पेंसिल टूटने के साथ
टूट जाते हैं आप
और आप के इरादे।
या फिर लेकर वादे,
उसे छिल कर
नई नोक बना कर
बढ़ जाते हैं आगे।

अपने हिस्से की

हमने अपने हिस्से की
ज़मीं पर घर बना लिया।
हमने अपने हिस्से की
रोशनी को समेट लिया,
हमने अपने हिस्से की
हवा को सांसों में बदल दिया।
बस...
हमने अपने हिस्से की
वर्षा को नहीं संभाला।
सरकार पर छोड़ दिया,
पानी ने हमें छोड़ दिया।
बचाएं प्यास का पानी,
लो आ रही है वर्षा रानी।
जल संरक्षण का समर्थन
बूंद-बूंद से सागर, परिवर्तन।

खानाबदोश

सारे दुःख संयम की गठरी में बांध कर।
हम चले तकलीफ़ो को कांधे पर टांग कर।

दुसरे को देखा, अपनी थकान भूल गया,
चेहरा धो लिया आँख से आंसू निकाल कर।

पिचके पेट पर जब भूख ने लगाई दुलत्ती,
दो घुंट पानी पी लिया अपनों से माँग कर।

जेठ के सूरज ने बरसाई आग सी तपन,
हम भी बैंठ गये पेड़ की छतरी तान कर।

मेरी मज़बूरी का मज़ाक मत उड़ा मेरे भाई,
ख़ुदा भी सहम गया था मेरे इम्तहान पर।

खानाबदोशों जैसी हो गई जिंदगी हमारी,
'देहाती' हमारा ना कोई दर है ना कोई घर।

हमारा गाँव तिरोड़ी है

जोश है ज्यादा संग मस्ती भी थोड़ी है,
मुस्कुराइए ये ही हमारा गाँव तिरोड़ी है।

चड्डा मंदिर हनुमान मंदिर और
सांई मंदिर से संवारा हुआ,
कृष्ण मंदिर, गायत्री मंदिर सती माई से और न्यारा हुआ।
चौरस्ता मात्र एक बाकी चौक तीन रोड़ी है।
मुस्कुराइए ये ही हमारा गाँव तिरोड़ी है।

मॉयल से मैगनीज खनन के लिए
सती तालाब से मछली के लिए
नहर गहरा, देता सरहद पे पहरा
गाय बैल भैंस बकरी चहूँ ओर
पर एक ना घोड़ा घोड़ी है।
मुस्कुराइए ये ही हमारा गाँव तिरोड़ी है।

गुजरी में तिवारी महाराज के समोसे,
चांदनी चौक सत्कार होटल के भरोसे,
चाऊमीन के साथ मिलती लोकु काका की पानीपुरी निगोड़ी है,
मुस्कुराइए ये ही हमारा गाँव तिरोड़ी है।

खेलों में अव्वल ग्रुप हो या सिंगल,
फुटबॉल, व्हालीबाल क्रिकेट में फेमस,
कबड्डी में कई की टूटी और कुछ की टांग तोड़ी है,
मुस्कुराइए ये ही हमारा गाँव तिरोड़ी है।

खरपतवार

एक खूबसूरत गुलाब
यदि झाड़ियों में
उग आए तो उसे
उचित प्रश्रय मिलता है
और न प्राथमिकता।
और
एक दिन उसे चर जाते हैं
आवारा पशु
खरपतवार समझकर।

ग़रीबी

ग़रीबी
एक विषय है,
जिसे सब पढ़ते हैं
जिसे सब समझते हैं।
परीक्षा देते हैं
पास हो जाते हैं,
फिर शोध करते हैं,
उपाधियां पाते हैं।
काश,
ग़रीबी समस्या होती,
तो अब तक सुलझ जाती।

यदि नहीं तो क्यों नहीं?

पैदल चाल,
सायकल चालन,
भारोत्तोलन में कई
विश्व रिकॉर्ड दर्ज हैं,
आज के पलायन करते
मजदूरों के हृदय विदारक दृश्य
कहीं किसी रिकॉर्ड को
तोड़ कर आगे तो नहीं बढ़ गये?
किसी ने देखा?
यदि हाँ तो कब।
यदि नहीं तो क्यों?

गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज होगा,
एक साथ सड़क पर असंख्य
मजदूरों का पलायन,
पांवों के छालों के विभिन्न
आकार और प्रकार।
भूख पर नियंत्रण की
अंतिम पराकाष्ठा,
जनप्रतिनिधियों की अभूतपूर्व निष्क्रियता।
क्या वाकई दर्ज होगी।
यदि हाँ, तो कब,
यदि नहीं, तो क्यों?

चलो, नया सबेरा लाते हैं

विस्मृत सी हो गई है वो
खुशियाँ थी घर में जो,
जीवन में ठहराव आया है,
ठहरे दिन ठहरी हुई रातें है, चलो, नया सवेरा लाते हैं।।

शब्दों को भावों से सजाते,
हँसी-खुशी से बाजे बजाते,
पलकों पर हमारे जमी हुई
थकान भरी धूल हटाते हैं, चलो, नया सवेरा लाते हैं।

नदी बहाते हैं सूखी रेत में,
किसान हो अपने खेत में,
हवा को दें मानसूनी न्यौता,
झूम कर बरखा बरसाते हैं, चलो, नया सवेरा लाते हैं।

भटके राही की राह बने हम,
सतर्क करें अपवाद बने कम।
अवसाद में आशा बन हम
विश्वास की फसल उगाते हैं, चलो, नया सवेरा लाते हैं।

सरसों के खेत पीले पीले,
गेहूँ के खेत भी हो सजीले,
पंछी भी गीत गाएँ नशीले,
हम भी उनसे सूर मिलाते हैं, चलो, नया सवेरा लाते हैं।।

सीमाओं का संकट

सरहदों में बंट जाती गर हवा
तो हवा के भी रंग बदल जाते।
सांसें भी मिलती फिर हिसाब से
सांस लेने के ढंग बदल जाते।।

जिस्म ढलता सरहदी रंगों में,
वजूद भी निलाम हो रहे होते,
सूरज की रोशनी सबकी न होती,
कुछ हँसते तो कुछ रो रहे होते।।

अनाज की शक्लें होती जुदा जुदा,
ईमान भी अलग- अलग होता।
इंसानियत खैरात माँगती फिरती,
ताक़त वालों का सारा जग होता।

नदियों के जल ने सब को सींचा,
भारत भाल के गौरव का भान हो,
उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम चहूँ ओर
मात्र जन गण मन का ही गान हो।

गौ माता को चरने दो

हम चले अपनी राह लोग कहते हैं तो कहने दो।
हम पर है सबकी निगाह लोग कहते हैं तो कहने दो।।

फक्त ख़ुद के लिए ही ज़िंदा कुछ मतलबपरस्त लोग,
मस्त है मस्ती में दुनिया वाले मरते हैं तो मरने दो।।

ज़िंदगी के लिए पार लिया मौत से बदतर रास्ता,
उन्होंने दिखाया हौसला लोग डरते हैं तो डरने दो ।।

वतन पर मरने वाले भी किसी कि माँग के सिंदूर हैं।
हे भगवान शहीद की बेवा को भी कभी संवरने दो।।

ज़िद पर अपनी आए तो हिला दे सारी कायनात।
खाओ कसम दरिंदों को ज़मीं पर पाँव न धरने दो।।

कब तक सवाल जवाब और बहस करते रहेंगे,
केसर की क्यारी में शांति से गौ माता को चरने दो।।

पांसे पलट गए

मशहूर खिलाड़ी थे जो अपना खेल जमाने में,
पांसे पलट गए महामारी से बचने में बचाने में।।

घर भर के सब लोग मना रहे मौत का मातम,
वो सोच रहा क्या मिलेगा तेरहवीं के खाने में।।

रोटी बनी रोटी निकली पर पहुंची नहीं भूखे तक,
हफ्तों गुजर गए भूख को इतना सा समझाने में।।

लाकडाऊन में कामवाली सबको याद आ रही,
बाबू तो खुद ही खो गये घरवाली के ताने में।।

इस बंद में शहर की आबोहवा देखने जो निकले,
हवा निकाल दी पुलिस ने अब बंद है थाने में।।

लठ्ठबाज मशहूर थे पर लठ्ठ नहीं खाए थे कभी,
खूब पड़े पिछवाड़े दिक्कत हो रही आने जाने में।।

ज्ञानी ध्यानी सब की अक्कल चारा चर रही,
मृत्यु अटल है, घिग्गी बंध गई इतना सा समझाने में।।

सुना था मिलिट्री फोर्स में सब काम करवाते हैं,
घर के भुक्तभोगी को परहेज़ नहीं वहाँ जाने में।।

ऋषि मुनि सी फिलिंग आ रही खुद की शक्ल देखकर,
साथी संगत सही मिले तो भला है बन जाने में।।

ठिठोली करो खूब पर सामाजिक फासला रखना,
देश का मुखिया परेशान है इतना सा समझाने में।।

सामाजिक अपराधों का उन्मूलन सा हो गया है,
मोदी जी क्या बुरा है हर साल इसे आजमाने में।।

देखना घुरना छूना ढकेलना सब बंद हो गया,
फासला परमानेंट कर दो ताले जड़ दो थाने में।।

ठोंक दो उसे जो रोकने से भी ना रुके 'देहाती',
लातों के भूत बातों से नहीं मानते किसी जमाने में।।

आई लव यू

"आई लव यू" शब्द
संभवत: मानसिक पराधीनता के द्वार पर पहली दस्तक है।
प्यार... की परिभाषा
समयानुकुल परिवर्तित होती रहती है,
प्यार,... समर्पण है कि अधिकार मेरी समझ में नहीं आ रहा है,
पति-पत्नी के बीच प्यार होता है
किन्तु दोनों ओर उसके मायने अलग-अलग होते हैं,
पति के लिए समर्पण और पत्नी के लिए अधिकार।
पत्नी की चाहत- मेरे 'उनकी' सारे शहर में चले
मगर 'उन' पर सिर्फ मेरी चले।
पति की आशंका "कहीं वो आज फिर रूठ न जाए।"
हम देख रहे हैं और ज़माना भी देखता है,
प्यार दोनों करते हैं मगर घुटने आदमी टेकता है,
प्रेमी के प्रणय निवेदन का जवाब जब प्रेमिका देती है तो लगता है
किसी 'हास्य कवि सम्मेलन' का शुभारंभ
कोकिल कंठी कवयित्री की वाणी वंदना से हो रहा है,
हास्य कवि सम्मेलन की तरह ही
जीवन के प्रारंभ में ठहाके दर ठहाके
और अंत में एक मार्मिक कविता से कार्यक्रम का अंत हो जाता है।

वो फिर उतर आए सड़क पर

अपनी अधनंगी आकांक्षाओं को
ढांकने का ढोंग करते-करते,
सम्पूर्ण मर्यादाओं को ध्वस्त करते
उस सर्वशक्तिमान ईश्वर को
आँखें तरेर कर देखते हुए छाती पीटते हुए
वो फिर उतर आए सड़क पर।

एक हव्वा महज़ अपने पराए का,
वो समेटने लगे संबंधों की अधकचरी जायदाद को,
नस्ल और जातीयता से बेबस होती
राष्ट्रीयता को धिक्कारते हुए
वो फिर उतर आए सड़क पर।

कुछ ने देखा कि उनको
कोई देख ही नहीं रहा है,
उनके अनुसार उनका अस्तित्व ही संकट में है,
लेकिन यह कैसे संभव है कि
सब के सब प्रसन्न होकर घूम रहे हैं अपनी मस्ती में।
इन्हें कोई घास भी नहीं डाल रहा,
अपने होने का मात्र एहसास दिलाने
वो फिर उतर आए सड़क पर।

काली अंधेरी रात में नींद नहीं आ रही,
रात है कि बीतने का नाम ही नहीं ले रही,
करवटें बदलते हुए
भूख को शांत करने की कोशिश करते हुए
आधा पेट खाना खाने से
अब आंतें भी अंत का संकेत दे रही है।
दो निवाले हलक से उतर कर उन्हे,
शायद ज़िन्दगी का आधार दे दे।
वो फिर उतर आए सड़क पर।

अफवाहों कि कोई दिशा नहीं होती,
न गति का पता होता है न विस्तार का,
वो अपना आकार ले लेती है अपने आप,
जिंदगी की तलाश में जो घर छोड़ कर चले थे,
वो फिर घर जाना चाहते हैं जिंदा रहने के लिए
इस भ्रम में कि ईश्वर है तो पहुंचा ही देगा घर तक,
वो फिर उतर आए सड़क पर।

कैसा लगता है

आँखों के रास्ते कोई दिल में उतर आता है तो कैसा लगता है।
रातों की नींद दिन का चैन चुरा लेता है तो कैसा लगता है।

एहसास स्पर्श का उफ़ सिरहन दौड़ जाती होंगी जिस्म में,
सच में कोई छू ही लेता है तुम्हें तो कैसा लगता है।

ख्वाबों में वह आता और चला जाता होगा शायद,
ख्यालों को हकीक़त में आजमाता है तो कैसा लगता है।

यादों में उसकी तुम अक्सर खो जाती होंगी अब तो,
बांहों में फंसकर उसकी हो जाती हो तो कैसा लगता है।

तन्हा जिंदगी में मायूसी कोहरा बन कर छा जाती है,
खुशियों का सूरज रोशनी देता है तो कैसा लगता है।

अक्सर ही खुश होती होंगी उसको करीब पाकर तुम,
तुमको तनहाई में रूलाता है कोई तो कैसा लगता है।

दूरियाँ दुनिया का दस्तूर नहीं मगर मज़बूरी है 'देहाती',
इनको मिटा कर तुम्हें अपना बना लेता है तो कैसा लगता है।।

दो गज का फासला

तुम्हे निहार लेता, कमी नहीं थी हौसले में,
सलीके से देख पाया दो गज के फासले में।।

धरती में धंसी निगाहें उठी नहीं कभी भी कहीं भी,
भगवान शरम वो हया दो गज के फासले में।।

छुई-मुई सा चलना संभलना भला लगता रहा,
चाहत को समझ पाया दो गज के फासले में।।

हलकी सी हवा में भी हिलोर खाते वो गेंसू तुम्हारे,
वह संवरना देख पाया दो गज के फासले में।।

सोचना तुम्हारे बारे में मगर देख ना पाना उफ़,
मोहब्बत को आजमाया दो गज के फासले में।।

तुम खुश रहो बस हमेशा यही चाहत है मेरी,
चाहा पर मिल न पाया दो गज के फासले में।

पतलून

मस्त थे हम यारों हमारी नज़र थी गाने की धून पर।
सबका ध्यान हम पर था हमारी नज़र पतलून पर।

बताते है कि बचपन में गीली थी,
हमने संभाला तो महज ढीली थी,
कमरबंद भी समर में छोड़ गया,
दो थी एक नीली एक पीली थी।
लिफाफा छोड़कर हमारी नज़र थी मजमून पर।
सबका ध्यान हम पर था हमारी नज़र पतलून पर।

ताऊ सयाने थे अंदाज़ सयाना था,
मेरा अंगूठा चुसना ही छुड़ाना था,
सारी तरकीबें बेकार हो चुकी थी,
ढीली पतलून फक्त आजमाना था।
सहमी सहमी सी नज़र थी ताऊ के जूनून पर।
सबका ध्यान हम था हमारी नज़र पतलून पर।

मुझे छोड़कर

कहाँ चल दिए यूँ मुझे छोड़कर।
टूथपेस्ट के ट्यूब सा निचोड़कर।।

हर कली की चाहत कि फुल बने।
खिलना असंभव टहनी छोड़कर।।

ईंट जोड़ कर मकान बना दिया।
घर बनेगा मगर रिश्ते जोड़कर।।

भीड़ में रहकर सिंगल सा वजूद है।
हर सिक्का देखो गुल्लक तोड़कर।।

उपद्रव भी सृजनात्मक होता है।
दूध में देखा था नींबू निचोड़कर।।

सारी कायनात को अपनी समझे।
बच्चा, माँ के आंचल को ओढ़कर।

हम हिंदुस्तानी

अनचाहे पड़ाव पर ठहरे, आओ
उठाएं कदम नई हिम्मत जोड़ें।
चुनौतियों को आमंत्रण दें और
कठिनाइयों के कान मरोड़ें।

विपदाओं से हम आँख मिलाएं,
आपदाओं को मारे चार कोड़े।
जीत की पीठ थपथपाएं और
हार को थप्पड़ मार नाक निकोड़ें।

भय से भयंकर हो युद्ध करेंगे
आशंकाओं का टेंटुआ दबा देंगे।
आग को काबू करेंगे मिलकर,
तुफान की भी हेकड़ी भुला देंगे।

ज़लज़ले पनाह माँगेंगे हमसे,
जोश जवानों में ऐसा भर देंगें
हम हिंद की संतानें हिंदुस्तानी
सारी दुनिया में तिरंगा फहरा देंगे।

सियासत नहीं सहयोग करो

हाय ये किस्मत के मारे मज़बूरी में मज़दूर,
सारे बड़बोले चैनलों से अभागे तू रहा दूर।।

तेरी भूख को बनाकर तमाशा देख रहे,
तेरी तपती देह पर स्वार्थ की रोटी सेंक रहे।।

तेरी चर्चा से आज हर टीवी चैनल गरमाया है,
पर अभागे तू किसी एक में भी नहीं आया है।।

भगीरथ भी याद आ गए तेरे अथक प्रयासों से,
जलते तलवे शर्मिंदा हैं सियासी उपहासों से।।

रेल भाड़े पर भड़ास निकाली इसे विराम दो,
भीख माँगने से पहले उन हाथों को काम दो।।

महामारी से जूझ रहे देश में अजीब सी हताशा है,
सारी दुनिया नमन करती, यहाँ महज तमाशा है।।

कल को सहेजने आज से ही तैयारी जरूरी है,
धीरे धीरे ही सही सारे रास्ते खोलना जरूरी है।।

सियासत नहीं सहयोग से व्यवस्था को सख्त करें,
कोरोना के योद्धाओं का हम आभार व्यक्त करें।।

श्रमिक दिवस

हे श्रमवीर, तू अनपढ़ है या फिर साक्षर हैं,
हर निर्माण पर तेरे लहू के ही हस्ताक्षर है।।

विश्व विजयी है तू तेरे श्वेद का ऋणी संसार,
"श्रमिक दिवस" पर शुभ कामनाएं दूं मैं वार।।

मज़दूर- मज़े से दूर और मज़दूर- चूर-चूर है,
कहीं आश्वस्त है मज़दूर कहीं पर मजबूर हैं।।

संगठित हुए तो अपने परिश्रम का मोल पाया,
बिखरा रहा तो तेरे श्रम को कौन तोल पाया।।

राष्ट्र निर्माण में अग्रणी श्रम का शंखनाद करो,
तुम ही राष्ट्र के सजग प्रहरी इस पर ना विवाद करो।।

व्यसनों से मुक्त हो शरीर और सोच स्वच्छ करो,
आओ, अपना हक माँगने तुम अंगद सा पैर धरो।।

आज के युवा

दिख रहा है दम क़दम-क़दम,
कभी छम-छम कभी धम-धम।
पर्वतों के पार पहुंच गए हम,
संमदर लांघ लिया न ठहरें हम।

हौसला बुलंद कि आर-पार हो,
शमशीर उठे तो सीना पार हो।
माँ भारती कभी न शर्मसार हो,
सिर कटे अपना तो स्वीकार हो।

हादसों के शिकार, वक्त के मारे,
जोशीले नौजवान देश के सारे।
परखना हो जब, तो कर दो इशारे,
दुश्मन को दिखा देंगे दिन में तारे।

आत्मनिर्भर बनाने को साथ दो,
आगे बढ़ने के लिए ही हाथ दो।
युवा ही बनायेंगे आने वाला कल
विश्वास दो, बल दो, ज़ज्बात दो।

अनजाना भय

सारी दुनिया एक अनजाने भय से ग्रस्त है,
तिनका ताड़ राई पहाड़ सबके सब पस्त है।

चूलें हिल गई दुनिया के बादशाह की भी,
दिखता नहीं है मगर दुश्मन जबरदस्त है।

ठहरी हुई है जिंदगी मगर रुकी नहीं है,
चल रहें हैं मंजिल मिलेगी यकीं यही है।

अंधेरा रात का कम बातों का ज्यादा है भाई,
अफवाहों का आकाश और जमीं नहीं है।

सतर्क रहो बेवजह मत निकलो घर से,
ख़बरें ख़तरनाक आ रही गाँव से शहर से।

लौटा कोई ख़ाली हाथ कोई उम्मीद लेकर,
जिंदगी दांव पर लगा दी मौत के डर से।

समय ठहरता नहीं यह वक्त गुजर जायेगा,
टुटा हुआ आशाओं का घर संवर जायेगा।

सावधानी, संयम और सहयोग देते रहे हम,
कोरोना वायरस का तांडव ठहर जायेगा।

नमन है, तुम्हे हे कोरोना के योद्धा सिपाही,
जीवन देने दूसरों को अपनी जान गंवाई।

आभार व्यक्त करते हैं अभिनंदन करते हैं,
आप ही के कारण हम ने हिम्मत जुटाई।

जो जो जब होना है वो वो तब होता है,
आज़ तो अपना है पगले तू क्यों रोता है।

नज़र उठाकर देख ये वही दुनिया है 'देहाती',
जहाँ ईसा अपना सलीब खुद ही ढोता है।

एक दिन ऐसा भी आएगा

हमने भी तो पहन कर चड्डी,
खूब खेलें कबड्डी-कबड्डी।
अब पतलून पहनकर भाई,
क्रिकेट भी ना खेला जाएगा, एक दिन ऐसा भी आएगा।।

और खूब खेलें गिल्ली-डंडा,
खूब दौड़े लेकर अपना झंडा।
खा-खा कर मुटिया गए अब
झंडा भी फहराया ना जाएगा, एक दिन ऐसा भी आएगा।।

आम अमरूद इमली के पेड़,
गाँव की पगडंडी खेत की मेढ़।
बेधड़क चलते और चढ़ जाते,
अब खुद संभला ना जाएगा, एक दिन ऐसा भी आएगा।।

सड़कों की हालत थी खस्ता,
पीठ लाद कर स्कूल का बस्ता।
पढ़ना और लड़ना सब सीखा
जाने कौन सा हुनर काम आएगा, एक दिन ऐसा भी आएगा।।

रोटी के संग अचार के टुकड़े,
गुड़ को देखकर मन ही उखड़े।
अनाज खूब भरा है भंडार में,
पर वो भूख कहाँ से लायेगा, एक दिन ऐसा भी आएगा।।

हम बोलेगा, तो बोलोगे कि बोलता है

वो भूल कर देश के हालात,
जो धोता नहीं है अपने हाथ।
ढंकता भी नहीं मुख अपना,
सुनता नहीं है सबकी बात।
हर नसीहत को तराज़ू में तौलता है।
हम बोलेगा, तो बोलोगे कि बोलता है।।

दुश्मन ही है सुन सब अपने,
सुनते नहीं गर कहा जो सबने।
जिद करके लायेगा ज़लालत,
बिखर जायेंगे जीवन के सपने।
गुस्से से अपना तो खून खौलता है।
हम बोलेगा, तो बोलोगे कि बोलता है।।

संभलो सब संकट की घड़ी है,
सारे संसार पर विपदा बड़ी है।
संयम ही समाधान है इसका,
घर में रहो, तुम्हे क्या हड़बड़ी है।
ठहर जा, वो कोरोना नाग डोलता है।
हम बोलेगा, तो बोलोगे कि बोलता है।।

अपनी बात है

हवा का रुख़ भांप जाओ तुम बनी बात है,
सुनो बहारों चुपचाप आओ अपनी बात है।

सावन में ही क्या पागल होती है बरखा रानी,
आज़ सूखी नदियाँ कह रही कल की बात है।

धड़कन तेज होती ही है रफ़्तार बढ़ने से,
ज़िंदा लाश ढोते लोगों की अनसुनी बात है।

कोरोना के कहर से दुनिया तो सहम गई है,
सावधानी जरूरी है भाई अकल की बात है।

लंबी कहानियाँ पढ़ी सुनी नहीं जाती अब,
जिंदगी एक किस्सा है कुछ पल की बात है।

सीमा पर आँख उठाए कोई तो खून खौलता है,
"देहाती" मेरी मातृभूमि मेरे वतन की बात है।

बरसात की आस

इस सावन के महीने में बरसात की आस है,
नहीं बरसा पानी देखो किसान भी उदास है।

मुरझाई कोंपलों को देख मुरझा गया कोई,
सिसकता बचपन देख जवानी बदहवास है।

पानी, पसीना और आंसू अब अलग नहीं है,
सुनो, इनके बरसने वज़ह हमेशा संत्रास है।

ठोकरें खाते हैं और संभल जाते हैं हम,
सफ़र और मंज़िल का फासला ख़ास है।

कोविड १९ ने हिला दिया सारी दुनिया को,
संभालो तो ज़िंदगी नहीं तो सत्यानाश है।

उठाया क़दम और चल पड़े हैं अब हम,
रास्ते हैं दोस्त और ख़ुद पर भी विश्वास है।

सीढ़ियाँ

उस पड़ाव तक
पहुंचने के लिए
चढ़नी थी नौ सौ सीढ़ियाँ।
मन मस्तिष्क एक दुसरे
से सवाल करते हैं,
क्या पार कर पाएंगे
हम इतनी सीढ़ियाँ।
दोनों देखते हैं पैरों की ओर,
इस छोर से- उस छोर तुम
क्या चढ़ पाओगे सीढ़ियाँ।
साहस जुटा कर चढ़ा
जब मैं पहली सीढ़ी
लगा दुसरी सीढ़ी हाथ बढ़ाया।
फिर उत्साह की हवा श्वेद सुखाती गई।
मैं ऊंपर नहीं चढ़ा,
सीढ़ियां स्वयं नीचे आती गई।

घंटानाद

यूँ ही नहीं होता
किसी मंदिर में घंटानाद।
ईष्ट देवता तक ले जाती है
दर्शन की प्रबल इच्छा,
प्रार्थनाएं ढूंढती है
मंदिर में घंटे का स्थान।
आस्थाएं पहुंचाती
निर्धारित स्थान तक।
गहन भक्ति भाव
ही हाथ में उठवाता है
हथौड़ा और
समर्पण ही करवाता
प्रहार।
जब हथौड़े की
चोट लगने से घंटे में
तीव्र घनघनाहट होती हैं
तो हृदय आल्हादित हो जाता है
अपनी प्रार्थना को
इष्ट देव के कर्णद्वार
में पहुंचा पाने का
आनंद मय विश्वास लिए।
यूँ ही नहीं होता
किसी मंदिर में घंटानाद ।

मतवाली शाम

तुमने जो दिया था वो ख़त वाली शाम,
भुलाए नहीं भूलती वो मतवाली शाम।

सूरज को डूबोती वो हठ वाली शाम,
ठंडक देती ठंडी ठंडी मतवाली शाम।

पंछियों को पुकारते घोंसले, घर उनके,
धूंधलाती रोशनी से चाहत वाली शाम।

बूंदाबांदी बरसात की छत पर हो टप-टप,
टिन पर करे टपर टपर आहट वाली शाम।

खबर

कोरोना
बड़े लोगों की
बीमारी क्या भैया,
आए दिन उन्ही की
ख़बरें आती है।
पगले,
ये बीमारी
सब को हो सकती है,
बस- खबरची उनकी
ख़बरें लेते है
हमको ख़बर देने के लिए।
और हमारी ख़बरें भी है
हम से बेखबर आजकल।

दीपक

टिमटिमाते दीपक से
किसी ने सवाल किया-
रे सूरज की रोशनी के
सामने तेरा तुच्छ प्रकाश
क्या करेगा।
दीपक ने
आत्मविश्वास के साथ
जवाब दिया-
सुर्यास्त के पश्चात
मेरा सुक्ष्म प्रकाश ही
अंधकार को हरेगा।

नीलकंठ महादेव

हे भगवान शिव शंकर,
हे नीलकंठ महादेव,
तुमने समुद्र मंथन से निकले
विष का पान किया और
नीलकंठ महादेव हो गए।
हम क्या नाम दें स्वयं को
जो रोज पीते हैं विष,
जो रोज खाते हैं विष,
जो रोज देखते हैं विष,
जो रोज सुंघते हैं विष,
जो रोज बोते हैं विष,
जो रोज काटते हैं विष,
जो रोज करते हैं विष पान,
उनको क्या नाम दें भगवान।।

ढोल

ढोल की पोल
सबसे जानते हैं,
ढोल धमाका धम्मक धम्म,
बचपन से सुन रहे हैं हम।
ढोलकिया, ढोल धारने से
पहले ढोल को बहुत ही
प्यार देखता है,
देखा है कभी।
जैसे कह रहा हो कि
मैं पूरी मस्ती से पीटने
वाला हूं तुझे,
मुझे मेरे हुनर को
आजमाना तुझ पर।
मेरा साथ देना
सहलाता है, ढोल को
जैसे मना रहा हो उसे।
और ढोल सुन भी लेता है
ठीक तरह समझ भी लेता है।
बेरहमी से पिटता भी है।
लेकिन साथ देता है,
साथ नहीं छोड़ता।
क्योंकि वह जानता है
किसी की जीत के
साझीदार होने का मतलब।

पल

हर पल फिसल जाता है हाथ से,
मानता है न समझता है बात से।
इस पल को संभालूं
तो वह निकल जाता है,
पल है नन्हा सा किंतु
हाथ नहीं आता है।
आ जाता हाथ तो मैं
अपने हिसाब से तोड़ता, जोड़ता,
मिनट घंटा से हट वह
दिन महीने साल तक दौड़ता।
निकला वह भी जबर,
मेरी तुच्छ सोच से बेखबर,
मुझे अपने विस्तार का
समीकरण दिखा गया।
पल पल से बने
दिन महीने साल सीखा गया।
बता गया कि यह सदियाँ,
युग और सृष्टि,
जहां तक पहुंच सकते हो तुम, तुम्हारी दृष्टि।
तुम, तुम्हारा जीवन और
यह संसार सारा।
ये धरती, ये अंबर, ये चाँद,
ये सूरज और ये तारा।
सब जमावड़ा है पल पल का।
पल- ही पहल है सारी हलचल का।

नाम – दिनेश कनोजे 'देहाती'

जन्म – १०/१०/१९६६

पिता – श्री रामचंद शिवलाल कनोजे

माता – श्रीमती अंजना देवी कनोजे

पत्नी – श्रीमती पुष्पा कनोजे

शिक्षा – बी.काम., एम.ए.(समाज शास्त्र), आई.टी.आई.(मोटर यांत्रिक), डी.आई.आर.पी.एम., कला शिरोमणि, हिंदी प्राज्ञ परीक्षा (संपूर्ण भारत में ८ वां स्थान)

विधा – छंद मुक्त कविताएं, गीत, गजल, मुक्तक, लघुकथा, वृत चित्र पटकथा।

संप्रति – चार्जहैंड मेकेनिकल (मॉयल लिमिटेड, तिरोड़ी खान)

राष्ट्रीय अध्यक्ष – साहित्य संगम,

प्रचार मंत्री – अखिल भारतीय विश्वकर्मा संगठन।

प्रकाशन – सृजन की बेला है-२००१, मीठा समंदर- २००८, दो कदम- २०१३, अहसास अपनेपन का- २०१६, ३६ सहयोगी साझा संकलनों में, ४ वृतचित्र की पटकथा एवं १५ लघुकथाएं।

संपादन – दो कदम (काव्य संग्रह), २००३ से राष्ट्रीय साहित्यकार सम्मेलन स्मारिका।

सम्मान – शताब्दी रत्न २००१, राष्ट्रीय रामनरेश त्रिपाठी सम्मान २००३, डॉ. अम्बेडकर फेलोशिप अवार्ड २००६, ग्रेट अचीवर अवार्ड २०१६, अंतरा शब्द शक्ति सम्मान २०१७, साहित्य कुसुमाकर सम्मान २०१७, साहित्य पुरोधा २०१८, साहित्य सृजन सम्मान, हिंदी विद्या रत्न भारती, साहित्य शिल्पी २०१६ सहित ५६ सम्मान। राष्ट्रीय क्वालिटी सर्कल सम्मेलन में २००० से निरंतर सहभागिता एवं २५ से अधिक पुरस्कार प्राप्त, अंतरराष्ट्रीय क्वालिटी कंट्रोल सर्कल सम्मेलन लखनऊ-२००१, हैदराबाद- २०१०, कोलंबो- २०१४, सिंगापुर- २०१८।

प्रसारण – वाह-वाह (सब टीवी), गुदगुदी (ई टीवी में.प्र.), काव्यांजलि (डी.डी.एम.पी.), कवि युद्ध (जी.टीवी.) एवं आकाशवाणी से कविताओं, वार्ताओं का प्रसारण।

पता – ४७, न्यु कालोनी, मॉयल- तिरोड़ी, जिला बालाघाट मध्यप्रदेश ४८१४४६

मोबाइल – 9893578322/7999623599

ई मेल – dineshkanoje19@gmail.com

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का.. आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9424765259, ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-5372-245-6

मूल्य 250/-